ग्राफ्ट सही से लगा है या नहीं, जानने में करेगी मदद

बाईपास के बाद नहीं करवानी होगी एंजियोग्राफी

■ वरिष्ठ संवाददाता, नई दिल्ली

बाईपास ऑपरेशन करवाने वाले मरीजों को अब एंजियोग्राफी, एक्स-रे करवाने के झंझट से आजादी मिल सकती है। बाजार में आई नई तकनीक की मदद से डॉक्टर ऑपरेशन थियेटर के टेबल पर ही यह जान सकेंगे कि ग्राफ्ट कितना परफेक्ट हुआ है। साथ ही यह भी पता लग जाएगा कि भविष्य में मरीजों को परेशानी होगी या नहीं। देश में पहली बार फ्लोरोसेंट ग्रीन एसपीवाई तकनीक की मदद से ट्रीटमेंट की शुरुआत की गई है।

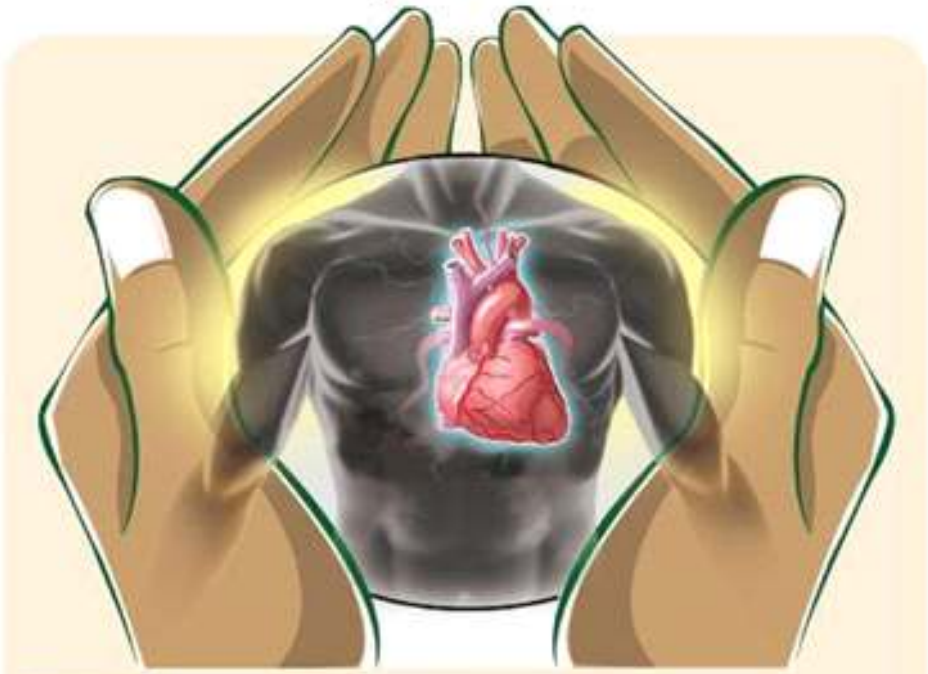

यह होगा फायदा

- किडनी पर नहीं पड़ेगा असर
- नई तकनीक आसान और यूजफुल
- शरीर में मौजूद डेड स्किन का भी लगेगा पता

किडनी पर नहीं होगा असर

मैक्स हॉस्पिटल के कार्डियेक सर्जन डॉक्टर रजनीश मल्होत्रा ने बताया कि आमतौर पर बाईपास सर्जरी में आरटरी में ग्राफ्ट लगाया जाता है। सर्जरी के बाद ग्राफ्ट कितना परफेक्ट काम कर रहा है इसके लिए मरीज की एंजियोग्राफी होती है। साथ ही मरीज को एक्स-रे की रेज से भी गुजरना होता है। एंजियोग्राफी के लिए 50 एमएल डाई यूज की जाती है। इतनी मात्रा में डाई यूज करने से किडनी डैमेज का खतरा रहता है। इस प्रॉसेस की पूरी फीस लगभग 15 हजार रुपये आती है।

देश में पहली बार इस तकनीक की शुरुआत

नई तकनीक में नो साइड इफेक्ट

वहीं दूसरी ओर एसपीवाई तकनीक काफी आसान और यूजफुल है। इसमें ऑपरेशन के तुरंत बाद इंजेक्शन के जरिए डाई इंजेक्ट की जाती है। इस प्रॉसेस में 50 एमएल की जगह केवल 0.5 एलएल डाई ही यूज होती है। काफी कम मात्रा में डाई यूज होने से किडनी डैमेज का कोई खतरा नहीं रह जाता है। साथ ही कैथलेब और एक्स-रे भी नहीं करवानी होती है। इससे मरीज को अस्पताल से जल्दी छुट्टी मिल जाती है। हालांकि इस तकनीक की फीस सामान्य प्रक्रिया से 5 हजार रुपये ज्यादा है। डॉक्टर ने बताया कि वर्तमान में यह तकनीक सिर्फ मैक्स अस्पताल के पास है।

एक्सीडेंट केसेज में भी हेल्प

फ्लोरोसेंट ग्रीन एसपीवाई तकनीक से स्किन के डेड और एक्टिव सेल का भी पता चल जाता है। इसे जैसे ही इंजेक्ट किया जाता है, इससे एक्टिव स्किन सेल का पता चल जाता है। डॉक्टर रजनीश ने बताया कि हाल ही में मैक्स में एक्सीडेंट का एक मामला आया था। एक्सीडेंट से 16 साल के सिमरन के पैर में मल्टीपल फ्रैक्चर हो गया था। इस तकनीक से तुरंत पता चल गया कि उसके शरीर में कहां-कहां एक्टिव सेल है और कहां स्किन डेड हो चुकी है। पहले इसके लिए इंतजार करना पड़ता था। हम एक्टिव सेल निकालकर रिकंस्ट्रक्ट सर्जरी करने में सफल रहे।